सदाचार का तावीज़

-हरिशंकर परसाई

दीर्घउत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न-1 विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार मिटाने के क्या-क्या उपाय बताए?

उत्तर-विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार मिटाने के लिए एक योजना तैयार की जिसमें राज्य की व्यवस्था में परिवर्तन करना, ठेका और ठेकेदार द्वारा अधिकारियों के घूस लेने के अवसर मिटाना आदि शामिल थे। घूस लेने के कारणों पर भी विचार करने के लिए कहा गया। ठेका देने के नियम को भी हटाने की सलाह दी गई।

प्रश्न-2 साधु ने सदाचार और भ्रष्टाचार के विषय में क्या कहा?

उत्तर-सदाचार और भ्रष्टाचार के विषय में साधु ने कहा कि सदाचार और भ्रष्टाचार मनुष्य की आत्मा में होता है, बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमानदारी की कल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ही ईमानदारी या बेईमानी के स्वर निकलते हैं जिन्हें आत्मा की पुकार कहते हैं। इसी पुकार के अनुसार ही मनुष्य काम करता है।

प्रश्न-3 महाराज को झंझट का क्या समाधान सुझाया गया?

उत्तर-महाराज को झंझट का यह समाधान सुझाया गया कि तावीज़ बनाने के लिए कारखाने का ठेका साधु बाबा को ही दे दिया जाए वे अपनी मंडली से तावीज़ बनवा कर राज्य में सप्लाई कर देंगे। राजा को तावीज़ के निर्माण की कोई चिंता नहीं रहेगी। उन्होंने इस काम के लिए साधु को पांच करोड़ रुपए पेशगी के रूप में दे दिए।

प्रश्न-4 राजा ने तावीज़ की सत्यता/वैधता की जांच कैसे की? उसके क्या परिणाम निकले?

उत्तर-तावीज़ की सत्यता की जांच करने के लिए राजा आम जनता के बीच पहुंचे। उन्होंने एक कर्मचारी को पांच रुपए घूस देने की कोशिश की। महीने की इकतीस तारीख यानी महीने का अंतिम दिन होने के कारण कर्मचारी ने रुपए ले लिए। इस प्रकार राजा को तावीज़ के काम करने का पता चला।

प्रश्न-5 आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं, अनुभव किया जा सकता है।

उत्तर-भ्रष्टाचार के बारे में बताते हुए यह वाक्य पहले विशेषज्ञ ने राजा से कहा।उसने बताया कि ईश्वर की तरह ही हम भ्रष्टाचार को देख नहीं सकते किंतु वह सब जगह मौजूद है । उसे सिर्फ़ महसूस किया जा सकता है।

(ख) तावीज़ में से स्वर निकल रहे थे-अरे, आज इकतीस है । आज तो ले ले।

उत्तर-इस कथन में तावीज़ की सहायता से यह समझाया गया है कि मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार आचरण करता है जरूरत पड़ने पर वह अपना सदाचार भूलकर भ्रष्टाचारी भी बन जाता है। कर्मचारी द्वारा राजा से रिश्वत लेते समय तावीज़ से यह स्वर निकल रहे थे।

प्रश्न- पाठ में छिपे व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-यह एक व्यंग्यात्मक नाटक है इस पाठ के माध्यम से लेखक ने हमको यह समझाने की कोशिश की है कि तावीज़ जैसी किसी भी चीज से भ्रष्टाचार को दूर नहीं किया जा सकता है। लेखक का मानना है कि किसी को सदाचारी तभी बनाया जा सकता है जब भ्रष्टाचार के मौके खत्म हों और कर्मचारियों को आर्थिक सुरक्षा मिले।

****